

34

मर्क

भूलोक में उम्बा पगट हुई
धरती का भार उतारन को... ॥२॥

शुम्भ चला भैया बनकर, और निशुम्भ चला अजगर बनकर
मेरी माता चली- बिजली बनकर, दुष्टों के दल संहारन को

भूलोक-----

शुम्भ की सेना दानव थी, और निशुम्भ चला बनकर अग्नि
मेरी माता की सेना थी जोगनी, देवों के कष्ट निवारन को

भूलोक-----

शुम्भ के हाथ में खड़ग थी, और निशुम्भ के हाथ में शम्भुगदर
मेरी माता के हाथ में था खयर, दुष्टों के अहम् मिटाने को

भूलोक-----

जब-जब धरती पे कष्ट बढ़ा, माता पगटीं शक्ति बनकर
जब-जब भक्तों ने याद किया, मर्क आई कष्ट निवारन को

भूलोक-----

किस विधि मर्क तेरी सेवा करें, हम हैं अबोध और अज्ञानी
तेरे चरणों में "श्री बाबा श्री" पड़े, नैया को पार करावन को

भूलोक-----